IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

कहानी, उपन्यास के अनुवाद में आने वाली समस्याएँ एवं समाधान

डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण
सहयोगी प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्रीमती गंगाबाई खिवराज घोड़ावत कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपुर।
chavangajanan1980@gmail.com

शोध सारांश : हिंदी भाषा अपने आधुनिक स्वरूप और प्रयोजन के प्रारंभ से ही अनुवाद कार्य से जुड़ी है। पिछले 200 वर्षों में हिंदी अनुवाद का बहुआयामी विकास और विस्तार हुआ है। विश्व के मानचित्र पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर में हिंदी को लोकप्रियता दिलाने में अनुवाद का विशेष महत्त्व रहा है। अनुवाद का महत्त्व आज के विश्व में इतना व्यापक है कि अगर आधुनिक समय को 'अनुवाद का समय' कहा जाए तो गलत नहीं होगा। अनुवाद सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर एक तरफ 'ट्रांसलेशन' अर्थात भिन्नता-विस्तार एवं परस्पर आत्मीयता के संचार का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है, तो दूसरी तरफ एक स्वतंत्र विद्या, एक दुर्लभ अनुशासन बनकर रोजी-रोटी, कामकाज तथा व्यावसायिक विनिमय के लिए एक सशक्त सुदृढ़ सेतु की भूमिका भी निभा रहा है। एक व्यक्ति की, एक समाज की और एक देश की समस्या का विश्लेषण एवं समाधान अनेक व्यक्तियों, अनेक जातियों, अनेक समाजों और अनेक देशों के संदर्भ में होने लगा। इस महत्त्वपूर्ण परिवर्तन को सामने लाने में निस्संदेह अनुवाद का बड़ा हाथ है। इसी की सहायता से अपरिचित संस्कृतियों की आपस में पहचान बनी और अनुवाद ने 'गूंगे के गुड़' का काम किया। आज अनुवाद किसी भी देश की सांस्कृतिक-दार्शनिक परम्पराओं, साहित्यिक मान्यताओं, वैज्ञानिकों आविष्कारों, तकनीकी उपलब्धियों और चिकित्सा सम्बन्धी विकास के विषय में ज्ञान प्राप्त करने का सशक्त माध्यम बन गया है। वर्तमान समय में कथा साहित्य (उपन्यास और कहानी) के प्रति पाठकों की विशेष रुचि रही है। इसीलिए आज विभिन्न भाषाओं के कथात्मक उपन्यास और कहानी साहित्य का अनुवाद ज्यादा मात्रा में हो रहा है। अनुवाद से उपन्यासों एवं कहानियों की अभिव्यक्ति होती है एवं उसके परिवेश का परिचय मिलता है। इसीलिए आज उपन्यास और कहानी साहित्य के अनुवाद को विशेष महत्त्व मिल रहा है। यह हमारे समाज का प्रतिबिम्ब होता है। कहानियों एवं उपन्यासों के अनुवाद गद्यात्मक होने के कारण इसके अनुवाद में जटिलताएँ अपेक्षाकृत रूप से कम होती हैं, परंतु कथा साहित्य का अपना शिल्प विधान होता है जो अनुवादकों के लिए चुनौतीपूर्ण होता है। शिल्प का विधान स्वयं में ही पुनर्रचना के समान होता है। अनुवादक को मूल लेखक की दार्शनिक विचारधारा को समझकर अनुवाद करना होता है। इसके अतिरिक्त कहानी व उपन्यास में भी कविता व नाटक की भाँति काव्यात्मकता का पुट रहता ही है। कहानी व उपन्यास का अर्थ बिल्कुल सपाटबयानी नहीं होता है। कहानी व उपन्यास के कुछ अंशों में, चाहे वे गद्य में हों या पद्य में, तरल अनुभूति को अपने में समाहित किए हुए काव्यात्मकता उपस्थित रहती है। यह बात अनेक कहानियों व उपन्यासों पर लागू होती है, चाहे वे किसी भी साहित्यकार के हों और चाहे किसी भी भाषा में लिखे हुए हों। हिंदी में अनुवाद कार्य का सबसे पुराना और परंपरागत क्षेत्र साहित्यिक कृतियों का अनुवाद है।

बीज शब्द – अनुवाद. स्त्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा, बहुआयामी, सृजनात्मकता, संरचना, समस्या और समाधान

I. प्रस्तावना

मानव जाति अपने भावों अथवा विचारों की अभिव्यक्ति शब्दों में करता है। वह 'शब्द' उसके अपने ही समुदाय, परिवेश या समाज की भाषा का ही होता है। इसी अभिव्यक्ति के माध्यम से ही मनुष्य अपने भावों अथवा विचारों को दूसरे मनुष्यों तक पहुँचाता है और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

एक दूसरे से जुड़ता है। पर विपरीत परिवेश, समाज या समुदाय होने पर मनुष्य अपने भावों, विचारों को दूसरे मनुष्यों तक पहुँचाने या समझने में असमर्थ होता है, तब उसे अनुवाद की आवश्यकता महसूस होती है। अनुवाद सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर एक तरफ 'ट्रांसलेशन' अर्थात भिन्नता-विस्तार एवं परस्पर आत्मीयता के संचार का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है, तो दूसरी तरफ एक स्वतंत्र विद्या है। अनुवाद का अर्थ है - एक भाषा में व्याप्त विचार, भाव और शैली को दूसरी भाषा में यथासंभव समान प्रभाव के साथ प्रस्तुत करना है। अनुवाद एक दुर्लभ अनुशासन बनकर रोजी-रोटी, कामकाज तथा व्यावसायिक विनिमय के लिए एक सशक्त सुदृढ़ सेतु की भूमिका भी निभा रहा है। एक व्यक्ति की, एक समाज की और एक देश की समस्या का विश्लेषण एवं समाधान अनेक व्यक्तियों, अनेक जातियों, अनेक समाजों और अनेक देशों के संदर्भ में होने लगा। इस महत्त्वपूर्ण परिवर्तन को सामने लाने में निस्संदेह अनुवाद का बड़ा हाथ है। इसी की सहायता से अपरिचित संस्कृतियों की आपस में पहचान बनी और अनुवाद ने 'गूंगे के गुड़' का काम किया। आज अनुवाद किसी भी देश की सांस्कृतिक-दार्शनिक परम्पराओं, साहित्यिक मान्यताओं, वैज्ञानिकों आविष्कारों, तकनीकी उपलब्धियों और चिकित्सा सम्बन्धी विकास के विषय में ज्ञान प्राप्त करने का सशक्त माध्यम बन गया है। हिंदी भाषा अपने आधुनिक स्वरूप और प्रयोजन के प्रारंभ से ही अनुवाद कार्य से जुड़ी है। पिछले 200 वर्षों में हिंदी अनुवाद का बहुआयामी विकास और विस्तार हुआ है। विश्व के मानचित्र पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर में हिंदी को लोकप्रियता दिलाने में अनुवाद का विशेष महत्त्व रहा है।

अनुवाद का महत्त्व आज के विश्व में इतना व्यापक है कि अगर आधुनिक समय को 'अनुवाद का समय' कहा जाए तो गलत नहीं होगा। डॉ॰ सुरेश सिंहल कहते है की "अनुवादक को मूल लेखक की दार्शनिक विचारधारा को समझकर अनुवाद करना होता है। इसके अतिरिक्त कहानी व उपन्यास में भी कविता व नाटक की भाँति काव्यात्मकता का पुट रहता ही है। कहानी व उपन्यास का अर्थ बिल्कुल सपाटबयानी नहीं होता है। कहानी व उपन्यास के कुछ अंशों में, चाहे वे गद्य में हों या पद्य में, तरल अनुभूति को अपने में समाहित किए हुए काव्यात्मकता उपस्थित रहती है। यह बात अनेक कहानियों व उपन्यासों पर लागू होती है, चाहे वे किसी भी साहित्यकार के हों और चाहे किसी भी भाषा में लिखे हुए हों।" वर्तमान समय में कथा साहित्य (उपन्यास और कहानी) के प्रति पाठकों की विशेष रुचि रही है। इसीलिए आज विभिन्न भाषाओं के कथात्मक उपन्यास और कहानी साहित्य का अनुवाद ज्यादा मात्रा में हो रहा है। "कहानियों एवं उपन्यासों के अनुवाद गद्यात्मक होने के कारण इसके अनुवाद में जटिलताएँ अपेक्षाकृत रूप से कम होती हैं, परंतु कथा साहित्य का अपना शिल्प विधान होता है जो अनुवादकों के लिए चुनौतीपूर्ण होता है। शिल्प का विधान स्वयं में ही पुनर्रचना के समान होता है।" अनुवाद से उपन्यासों एवं कहानियों की अभिव्यक्ति होती है एवं उसके परिवेश का परिचय मिलता है। इसीलिए आज उपन्यास और कहानी साहित्य के अनुवाद को विशेष महत्त्व मिल रहा है। यह हमारे समाज का प्रतिबिम्ब होता है। इन सबके लिए अनुवादक को दोनों समाजों, संस्कृतियों एवं भाषाओं की पूरी पकड़ होनी चाहिए अन्यथा उसे सफलता मिलने में सन्देह ही रहता है। कहानी और उपन्यास के भाव पक्ष के साथ-साथ उसके शिल्प पक्ष में मूल पाठ के सौंदर्य और ध्वन्यात्मक शक्ति का भी ध्यान रखना पड़ता है। भाषा शैली की सहजता, स्वाभाविकता, रवानी और गद्यात्मक लय भी कहानी और उपन्यास के अनुवाद को मूल पाठ का सहपाठ बनाने में सहायक होते हैं। भाषा शैली की दृष्टि से भले ही कथा सुगम लगती हो, पर ऐसा नहीं है। कहानी या उपन्यास का एक-एक पात्र एक जीवंत चरित्र होता है। उसकी जीवंतता कायम रखना अनुवादक की भाषा शैली पर निर्भर करती है। अनुवाद में यह जीवंतता कायम रखना अनुवादक के लिए टेढ़ी खीर के समान होती है। अतः कहा जा सकता है कि कथा साहित्य के अनुवाद में सावधानियाँ बरतकर अनुवाद करना अति आवश्यक है। हिंदी में अनुवाद कार्य का सबसे पुराना और परंपरागत क्षेत्र साहित्यिक कृतियों का अनुवाद है। संस्कृत और अंग्रेजी नाटकों को हिंदी में अनुवादित कर भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इसका प्रारंभ किया था। साहित्यिक अनुवाद विशेष रूप से कहानी और उपन्यास का अनुवाद केवल भाषा परिवर्तन नहीं होता, बल्कि संस्कृति, भाव, शैली और संदर्भ का पुनर्सृजन होता है। इस प्रक्रिया में अनुवादक को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। साहित्यिक अनुवाद एक सृजनात्मक प्रक्रिया है। कहानी और उपन्यास का अनुवाद केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं बल्कि भाव, संस्कृति, विचार, शैली तथा साहित्यिक सौंदर्य का पुनर्निर्माण होता है। साहित्य मानव जीवन, समाज, संस्कृति और संवेदनाओं का प्रतिबिंब होता है, इसलिए इसका अनुवाद अत्यंत जटिल कार्य माना जाता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

कहानी एवं उपन्यास के अनुवाद में आने वाली समस्याएँ एवं उनके समाधान

1. सांस्कृतिक संदर्भ

कथा-साहित्य के अनुवाद की विशेष एवं मुख्य समस्या मूल कृति के सांस्कृतिक परिवेश का लक्ष्यभाषा में पुनःसृजन है। नाट्यकाव्य की भाँति उपन्यास या कहानी के अनुवाद में भी अनुवादक को मूल रचना की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा मूल लेखक की मान्यताओं की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। अनुवादक की समस्या मूल कृति के परिवेश के अनुसार ही कम-ज्यादा होती है। यदि परिवेश किसी भारतीय, सामाजिक, सामसामयिक, स्थानीय आदि हो सकता है। परिवेश अगर किसी भौगोलिक या ऐतिहासिक है तो समस्या कम होती है। मूल कृति के विदेशी वातावरण को सुरक्षित रखने के लिए अनुवादक को दोनों समाजों व संस्कृतियों का गहरा अध्ययन करना पड़ता है। विदेशी सन्दर्भ में दोनों संस्कृतियाँ एक-दूसरे से इतनी घुली-मिली नहीं होतीं जबकि भारतीय सन्दर्भ में यह अन्तर अपेक्षाकृत कम हो जाता है। राजेन्द्र सिंह बेदी द्वारा उर्दू में लिखे गए उपन्यास एक चादर मैली सी का अनुवाद यदि हिन्दी, पंजाबी या फिर किसी अन्य उत्तर भारत की भाषा में किया जाए तो समस्या इतनी विकट नहीं होगी, क्योंकि इनके रीति-रिवाजों में काफी हद तक समानता पाई जाती है। "लेकिन यदि इसका अनुवाद मलयालम, तमिल, कन्नड़ में किया जाए या फिर किसी विदेशी भाषा में किया जाए तो अनुवाद उतना ही कठिन होता जाएगा। भारतीय भाषाओं में तो फिर भी काम चल सकता है, किन्तु विदेशी भाषा में कठिनाई होगी।"

समस्या :

कहानी और उपन्यास में स्थानीय संस्कृति, परंपरा, सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक विश्वास तथा जीवनशैली का वर्णन होता है। दूसरी भाषा के पाठकों के लिए ये संदर्भ अपरिचित हो सकते हैं।कहानी या उपन्यास में स्थानीय रीति-रिवाज, परंपराएँ, खान-पान, सामाजिक संबंध आदि होते हैं, जिनका दूसरी भाषा में समान रूप नहीं मिलता।

समाधान :

सांस्कृतिक शब्दों को यथासंभव मूल रूप में रखा जाए। आवश्यकतानुसार व्याख्या या टिप्पणी दी जाए। सांस्कृतिक पहचान को नष्ट किए बिना अर्थ स्पष्ट किया जाए। सांस्कृतिक अर्थ को बनाए रखते हुए भावानुवाद करना चाहिए। आवश्यक होने पर टिप्पणी (Footnote) या स्पष्टीकरण दिया जा सकता है।
मूल संस्कृति की पहचान को सुरक्षित रखना चाहिए।

2. लेखक की भाषा एवं शैली

कथा-साहित्य के अनुवाद की समस्याओं के सन्दर्भ में दूसरी समस्या भाषा-प्रयोग के स्तर पर है। यह विधा चूँकि वर्णनात्मक विधा है, इसलिए इसमें पठनीयता का गुण सर्वोपरि होना चाहिए। पठनीयता में रोचकता का गुण अति आवश्यक होता है और रोचकता के लिए भाषा का प्रवाह भी अच्छा होना चाहिए। इसके लिए यथासम्भव मुहावरों एवं लोकोक्तियों का काफी प्रयोग करना चाहिए। लम्बे वाक्यों को छोटे-छोटे वाक्यों में तोड़ने से भी प्रवाह में गति आती है। जटिल संरचनाओं का साधारणीकरण करने से भी प्रवाह में वृद्धि होती है।

समस्या :

प्रत्येक लेखक की अपनी विशिष्ट शैली होती है — जैसे सरल, व्यंग्यात्मक, भावुक या दार्शनिक शैली। अनुवाद में यह शैली बदल जाने का खतरा रहता है। शाब्दिक अनुवाद करने पर शैली नष्ट हो जाती है।

समाधान :

लेखक की भाषा, वाक्य संरचना एवं अभिव्यक्ति का अध्ययन किया जाए। अनुवाद में उसी शैलीगत प्रभाव को बनाए रखने का प्रयास किया जाए। अनुवादक अपनी व्यक्तिगत शैली थोपने से बचे। लेखक की शैली लय और अभिव्यक्ति को समझकर अनुवाद करना। लक्ष्य भाषा में स्वाभाविक एवं साहित्यिक भाषा का प्रयोग करना। शब्दों के बजाय प्रभाव (Effect) को बनाए रखना।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

3. कथानक एवं संरचना

कथानक (Plot) और संरचना (Structure) का अनुवाद केवल भाषा का रूपांतरण नहीं है, बल्कि यह एक पूरे 'संसार' को दूसरी संस्कृति में ढालने की प्रक्रिया है। जब हम किसी कहानी या उपन्यास के ढांचे का अनुवाद करते हैं, तो हमारे सामने कई तकनीकी और रचनात्मक चुनौतियां आती हैं।

समस्या :

उपन्यासों एंव कहानी में घटनाओं का क्रम, समय संरचना, फ्लैशबैक, आंतरिक संवाद आदि जटिल होते हैं। गलत अनुवाद से कथानक भ्रमित हो सकता है। किसी विदेशी कहानी में कोई घटना (जैसे: नायक का घर छोड़ना या किसी विशेष त्योहार का उत्सव) उस संस्कृति के लिए सामान्य हो सकती है, लेकिन अनुवादित भाषा के पाठकों के लिए वह तर्कहीन लग सकती है। वाक्य विन्यास (Syntax): अंग्रेजी में छोटे और सीधे वाक्य संरचना को गति देते हैं, जबकि हिंदी या संस्कृतनिष्ठ भाषाओं में लंबे और जटिल वाक्य गहरे भाव प्रकट करते हैं। संरचना अनुवाद में यह 'लय' (Rhythm) अक्सर टूट जाती है।

समाधान :

मूल पाठ की संरचना को सुरक्षित रखा जाए। घटनाओं के क्रम और कथावाचन शैली को यथावत रखा जाए। अर्थ स्पष्टता को प्राथमिकता दी जाए। यदि मूल कथानक की कोई घटना लक्ष्य भाषा के पाठकों के लिए अपरिचित है, तो अनुवादक को उसे स्थानीय संदर्भ में ढालना चाहिए। इसे 'देशजकरण' (Domestication) कहते हैं।संरचना को बनाए रखने के लिए शब्दों के पीछे न भागकर 'प्रभाव' के पीछे भागना चाहिए। अगर मूल लेखक ने कहानी में रहस्य (Suspense) पैदा करने के लिए छोटे वाक्यों का प्रयोग किया है, तो अनुवादक को भी अपनी भाषा में ऐसी ही तकनीक अपनानी चाहिए।

4. पात्रों की बोली एवं संवाद

अनुवाद की प्रक्रिया में पात्रों की बोली (Dialect) और संवाद (Dialogue) का अनुवाद करना सबसे चुनौतीपूर्ण और सूक्ष्म कार्य है। यहाँ अनुवादक को केवल शब्दों का अर्थ नहीं बदलना होता, बल्कि पात्र की सामाजिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, स्वभाव और उसके 'लहजे' को दूसरी भाषा में जीवित रखना होता है।

समस्या :

उपन्यास या कहानी में पात्रों की क्षेत्रीय बोली, सामाजिक स्तर या व्यक्तित्व भाषा से व्यक्त होता है।पात्रों का व्यक्तित्व उनकी भाषा, बोली और संवाद शैली से व्यक्त होता है। क्षेत्रीय बोली का अनुवाद कठिन होता है।

समाधान :

संवादों को लक्ष्य भाषा में स्वाभाविक बनाए रखना।पात्र की सामाजिक पहचान के अनुसार भाषा का चयन करना। कृत्रिम भाषा से बचना। पात्र के सामाजिक स्तर और मानसिकता के अनुरूप भाषा का चयन किया जाए। संवाद स्वाभाविक एवं जीवंत बनाए जाएँ। अत्यधिक कृत्रिम भाषा से बचा जाए।

5. मुहावरों एवं लोकोक्तियों एवं प्रतीक

निबन्धों या अन्य गद्य-विधाओं के अनुवाद में एक समस्या मुहावरों व लोकोक्तियों के अनुवाद की होती है। ये मुहावरे संस्कृति-विशेष की विशेषताओं के सूचक होते हैं और इनके समानार्थक अथवा समीपार्थक मुहावरों की लक्ष्यभाषा में खोज करनी चाहिए। कभी-कभी इनका अनुवाद भी करना पड़ता है। विद्यानिवास मिश्र के निबन्धों से कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—(i) मैं सिर पर पैर रखकर भागा और मुझे लगा कि जितनी बड़ी भीड़... (ii) अधिकतर लोग लोहा लगने की बाट जोहते रहते हैं और मुर्गे की...

सहज इस सन्दर्भ में समस्या लक्ष्य भाषा में मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग के स्तर पर है। भाषा को प्रवाहमयी, और बोधगम्य बनाने में इनका बहुत बड़ा हाथ होता है। इसलिए स्रोतभाषा में सामान्य भाषा का प्रयोग होने पर भी अनुवादक को उपन्यासों व कहानियों के अनुवाद में यथासम्भव मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग करना चाहिए। कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं—

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

क्रम मूल (English)	सामान्य अनुवाद	प्रस्तावित अनुवाद
(i) I could not make out anything	मैं कुछ नहीं समझ सका	मेरे कुछ पल्ले नहीं पड़ा

(ii) क्रम मूल (English)- Better you get your daughter married

सामान्य अनुवाद - अच्छा होगा यदि तुम अपनी लड़की की शादी कर दो अब।
प्रस्तावित अनुवाद - तुम्हें बेटी के हाथ पीले कर देने चाहिए।

समस्या :
कथा साहित्य में मुहावरे, प्रतीक और रूपक गहरे सांस्कृतिक अर्थ रखते हैं, जिनका सीधा अनुवाद संभव नहीं होता। मूल भाषा के मुहावरे दूसरी भाषा में सीधे अनुवाद योग्य नहीं होते।

समाधान :
लक्ष्य भाषा में समानार्थी मुहावरे खोजे जाएँ। प्रतीकात्मक अर्थ को बनाए रखते हुए भावार्थ दिया जाए। आवश्यक होने पर व्याख्यात्मक अनुवाद किया जाए। समान अर्थ वाले मुहावरे लक्ष्य भाषा में खोजे जाएँ। यदि समकक्ष मुहावरा न मिले तो भावार्थ प्रस्तुत किया जाए।

6. भावात्मकता एवं वातावरण

कहानी और उपन्यास की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता वर्णनात्मक रोचकता होती है, जिसे अनुवाद में भी बनाए रखना आवश्यक होता है। इसके लिए भाषा प्रवाहमयी और स्वाभाविक होनी चाहिए। कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि हम कुछ बातें सिर्फ इसलिए भूल जाते हैं, क्योंकि हम उन्हें भूल जाना चाहते हैं। और शायद बहुत से लोग निश्चित समय पर दवाई लेना इसलिए भूल जाते हैं, क्योंकि उन्हें दवाई लेना पसन्द ही नहीं है।

समस्या :
कहानी या उपन्यास का भावनात्मक वातावरण — जैसे करुणा, प्रेम, हास्य, रहस्य या व्यंग्य — अनुवाद में कमजोर पड़ सकता है। हिंदी में 'तू', 'तुम' और 'आप' के प्रयोग से जो भावनात्मक निकटता या दूरी दिखाई जा सकती है, वह अंग्रेजी के 'You' में संभव नहीं है। अनुवाद करते समय यह सूक्ष्म भावना अक्सर खो जाती है। यदि कोई रूसी कहानी 'साइबेरिया की कड़ाके की ठंड' के बारे में है, तो एक उष्णकटिबंधीय (Tropical) पाठक के लिए उस 'ठिठुरन' और 'एकाकीपन' को महसूस करना कठिन हो सकता है।

समाधान :
अनुवादक को शब्दों के पीछे भागने के बजाय उस 'इमोशन' को पकड़ना चाहिए। अगर मूल पाठ में कोई शब्द पाठक को 'रुलाता' है, तो अनुवाद में भी उसी प्रभाव वाला शब्द चुनना चाहिए, भले ही उसका शाब्दिक अर्थ थोड़ा अलग हो। पाठ के भावात्मक प्रभाव को समझकर अनुवाद किया जाए। प्रसंगानुकूल शब्दों एवं वाक्यों का चयन किया जाए। पाठक पर मूल जैसा प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास किया जाए। शब्दानुवाद के बजाय भावानुवाद अपनाना। प्रसंग के अनुरूप शब्द चयन करना। पाठक पर मूल जैसा प्रभाव उत्पन्न करना।

7. शीर्षक (Title) के अनुवाद

अनुवाद की दुनिया में शीर्षक (Title) का अनुवाद करना सबसे चुनौतीपूर्ण कार्यों में से एक है। शीर्षक केवल शब्दों का समूह नहीं होता, बल्कि वह पूरी सामग्री का 'चेहरा' और 'विपणन उपकरण' (Marketing Tool) होता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

समस्या :

अनेक साहित्यिक कृतियों के शीर्षक सांकेतिक या दार्शनिक होते हैं। कई बार शीर्षक प्रतीकात्मक या सांकेतिक होता है। शीर्षक का संक्षिप्त और प्रभावशाली होना जरूरी है। कभी-कभी मूल भाषा का छोटा शीर्षक अनुवाद के बाद बहुत लंबा और उबाऊ हो जाता है।

समाधान :

शीर्षक के गूढ़ अर्थ को समझकर अनुवाद किया जाए। कभी-कभी मूल शीर्षक को बनाए रखना अधिक उचित होता है। शीर्षक का अर्थ, संकेत भाव समझकर अनुवाद करना। आवश्यकता होने पर मूल शीर्षक को बनाए रखना। कभी-कभी मूल शीर्षक इतना प्रसिद्ध होता है कि उसे वैसा ही रहने देना बेहतर होता है। इसे 'लिप्यंतरण' (Transliteration) कहते हैं।

8. लंबाई एवं कथन शैली

अनुवाद केवल एक भाषा के शब्दों को दूसरी भाषा में बदलना नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक और भाषाई पुल बनाने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में लंबाई (Length) और कथन शैली (Narrative Style) दो सबसे बड़ी चुनौतियां बनकर उभरती हैं।

समस्या :

कथा साहित्य में अनुवाद में अगर लंबाई बढ़ जाए, तो मूल रचना की लय (Rhythm) बिगड़ जाती है। कुछ भाषाएँ विस्तृत होती हैं जबकि कुछ संक्षिप्त; इससे कथानक की गति प्रभावित होती है।विभिन्न भाषाओं की व्याकरणिक संरचना अलग-अलग होती है, जिससे अनुवादित पाठ मूल पाठ से छोटा या बड़ा हो जाता है।

समाधान :

अनावश्यक विस्तार या संक्षेप से बचना। मूल कथानक की गति और प्रवाह बनाए रखना।समानार्थी शब्दों का चयन: लंबे वाक्यांशों की जगह सटीक 'एक शब्द' का प्रयोग करें। (जैसे: 'जो कभी न मरे' की जगह 'अमर')।

9. अनुवादक की सृजनात्मक भूमिका

अनुवादक की सृजनात्मक भूमिका जितनी महत्वपूर्ण है, उतनी ही चुनौतीपूर्ण भी। सृजनात्मकता और मूल रचना के प्रति वफादारी के बीच एक बारीक संतुलन बनाना पड़ता है।

समस्या :

अनुवादक यदि अत्यधिक स्वतंत्रता लेता है तो मूल रचना विकृत हो सकती है। साहित्य की भाषा सामान्य भाषा से भिन्न होती है। इसमें अलंकार, प्रतीक, बिंब, व्यंजना तथा काव्यात्मकता होती है। शाब्दिक अनुवाद करने से साहित्यिक सौंदर्य समाप्त हो जाता है। अति-सृजनात्मकता का जोखिम कभी-कभी अनुवादक अपनी सृजनात्मकता के मोह में मूल लेखक के विचार को ही बदल देता है, जिसे 'अनुवाद' के बजाय 'रूपांतरण' कहना अधिक उचित होगा।

समाधान :

अनुवाद में निष्ठा (Faithfulness) और सृजनात्मकता (Creativity) का संतुलन रखा जाए। मूल लेखक की भावना सर्वोपरि रखी जाए। सृजनात्मक समाधान सटीक शब्द का अभाव भावानुवाद (Sense-for-sense): शब्दों के पीछे भागने के बजाय उस विचार को अपनी भाषा की शैली में नए सिरे से गढ़ना।

निष्कर्ष

साहित्य मानव जीवन, समाज, संस्कृति और संवेदनाओं का प्रतिबिंब होता है, इसलिए इसका अनुवाद अत्यंत जटिल कार्य है। साहित्यिक अनुवाद विशेषतः कहानी एवं उपन्यास का अनुवाद एक कला और कौशल दोनों है। कहानी और उपन्यास का अनुवाद

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं बल्कि भाव, संस्कृति, विचार, शैली तथा साहित्यिक सौंदर्य का पुनर्निर्माण होता है। कथा-साहित्य के अनुवादक को उन सभी समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है जो कविता व नाटक के अनुवाद में सामने आती हैं। इसलिए उपन्यास व कहानी में अन्य विधाओं की विशेषताओं का भी संलक्षण होता है और इसी से अनुवादक की समस्या भी विकट हो जाती है। वास्तव में अनुवाद शब्दों और वाक्यों का नहीं होता, हालांकि प्रक्रिया वैसी ही होती है, बल्कि ऐसे भावों का होता है जो मूल लेखक की विशिष्ट भाषा-शैली के द्वारा अभिव्यक्त किए जाते हैं। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह हुआ कि कथा-साहित्य के अनुवाद की विशेषता उसके कथ्य और शैली पर निर्भर करती है। इस प्रकार के अनुवाद में भाव-भंगिमाओं, शैली की सूक्ष्मताओं, अर्थ-छायाओं, लाक्षणिक एवं व्यंजक अभिव्यक्तियों, प्रतीकों, बिम्बों, अलंकारों एवं काव्यात्मक प्रयोगों के रूप में अनेक समस्याएँ अनुवादक के सामने प्रस्तुत होती हैं। इन सबके लिए अनुवादक को दोनों समाजों, संस्कृतियों एवं भाषाओं की पूरी पकड़ होनी चाहिए अन्यथा उसे सफलता मिलने में सन्देह ही रहता है। कहानी और उपन्यास के भाव पक्ष के साथ-साथ उसके शिल्प पक्ष में मूल पाठ के सौंदर्य और ध्वन्यात्मक शक्ति का भी ध्यान रखना पड़ता है। भाषा शैली की सहजता, स्वाभाविकता, रवानी और गद्यात्मक लय भी कहानी और उपन्यास के अनुवाद को मूल पाठ का सहपाठ बनाने में सहायक होते हैं। भाषा शैली की दृष्टि से भले ही कथा सुगम लगती हो, पर ऐसा नहीं है। कहानी या उपन्यास का एक-एक पात्र एक जीवंत चरित्र होता है। उसकी जीवंतता कायम रखना अनुवादक की भाषा शैली पर निर्भर करती है। अनुवाद में यह जीवंतता कायम रखना अनुवादक के लिए टेढ़ी खीर के समान होती है। अतः कहा जा सकता है कि कथा साहित्य के अनुवाद में सावधानियाँ बरतकर अनुवाद करना अति आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. अनुवाद संवेदना और सरोकार, डॉ सुरेश सिंहल, पृ.सं.181
2. अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार, डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल, पृ.सं. 103
3. अनुवाद संवेदना और सरोकार, डॉ सुरेश सिंहल, पृ.सं.187-188
4. तुम चन्दन हम पानी, विद्यानिवास मिश्र, पृ.स. 116
5. वही. पृ.सं.88